कहानी

अपने अपने दुर्ग

-सोमेश शेखर चन्द्र

बीकापुर अस्पताल के दक्षिण, उसकी बाउन्ड्री से लगे, लबे रोड जो तीन मकान बने हैं उनमें से सबसे बडा वाला मकान पारसनाथ बाबू का है। इतनी छोटी सी जगह मे, पारस नाथ बाबू के, इतना बड़ा मकान बनवाने के पीछे, कारण यह नही था कि उनका परिवार काफी बड़ा था अैर उसके रहने के लिए, उन्हे इसी तरह के, बडे मकान की जरूरत थी। पारसनाथ बाबू के दो लड़कियाॅ थीं और दोनो को व्याह गौना कर उन्होने विदा कर दिया था और वे, अपने अपने घरों पर थी। बहुत बाद में, या इसी को यूँ भी कह सकते है कि, जब उनकी जनानी की, संतान पैदा करने की उम्र, करीब करीब खत्म होने पर थी तो काफी मान मनौती और दवा दारू के बाद, उन्हे एक बेटा पैदा हुआ था। और उनके उस इकलौते बेटे के रहने के लिए मकान की जरूरत तो थी लेकिन, उसे इतने बड़े मकान की जरूरत कत्तइर् नही थी। इतना ही नही, पारसनाथ बाबू जिस समय अपना यह मकान बनवाना शुरू किए थे उस समय तक बेटा उनका, ढेर सारी बातें समझने लग गया था और उसने, तो उन्हे यह मकान बनवाने से ही मना कर दिया था। ऐसा है पापा कि आप, पाँच साल बाद अपनी नौकरी से रिटायर करेंगे। उसके बाद मै, अपनी साठ साल की उम्र तक नौकरी करूॅगा। और जब तक मै नौकरी में रहूॅगा तबतक तो मै, यहाँ रहने से रहा' और नौकरी से रिटायर होने के बाद, आप क्या समझते है कि मैं, इतनी गॅवइर् 'और थर्ड क्लास की' जगह में आकर, आपकी यह थाती संभालूॅगा?

बेटे की इतनी गैर जिम्मेदाराना बात, अैार उसे उसने जैसी घृष्टता से कहा था उसे सुनकर पारसनाथ बाबू एकदम अवाक रह गये थे। थोड़ी देर तक वे, उसकेे चेहरे पर, कुछ इस तरह ताकते बैठे रह गए थे जैसेकि उसकी बात उन्होंने समझा ही न हो। लेकिन जब बात उनकी समझ में आइर् थी तो, गुस्से से उनके कान मुह एकदम लाल पड़ गए थे। पत्नी उनकी उस समय उनकी बगल में ही बैठी हुइर् थी। बेटे की बात सुनकर, पहले तो वे, यह समझकर चहक उठी थी कि मुन्ना उनका, इतना बड़ा आदमी बन जाएगा, इतना बड़ा कि वह बीकापुर जैसी छोटी जगह को लात मारेगा, लेकिन जब उनकी नजर, पारसनाथ बाबू के लाल भभूका, चेहरे पर गइर् थी तो उन्हें, यह बात समझते देर नही लगी थी कि मुन्ने की बात, पारस नाथ बाबू को बुरी तरह अखर गइर् है और वे, स्थिति को संभालने के लिए, मुन्ने को डाॅटने लग गइर् थी, देखती हूॅ तेरी जुबान, आजकल बहुत ज्यादा चलने लग गइर् है। बिना सोचे समझे, जो भी मुँह में आता है अदद बदद बक देता है आखिर तू इतना बदतमीज और बेशर्मा कैसे हो गया, अॅय?

माॅ, मेरी बात आप दोनो को अच्छी नहीं लगेगी जानता हूॅ लेकिन जो सच है उसे मैने कह दिया अब आगे आप लोगों की मर्जी। माॅ के डाॅटने पर बेटा, दबने और अपनी गलती मानने की बजाए, बड़ी दृढ़ता से दोनो को इतना सुनाकर अपने पाॅव पटक वहाॅ से हट गया था।

जरूरत के हिसाब से देखा जाए तो पारसनाथ बाबू को अकेले बेटे के लिए इतना बड़ा मकान बनवाने की सचमुच कोइर् जरूरत नही थी और उस हालत में तो कत्तइर् नही जब बेटा, उनका, जिसके लिए, पारसनाथ बाबू यह मकान बनवा रहे थे खुद उसने जोर देकर और पूरे तर्क के साथ पारस नाथ बाबू से कह दिया था कि उसके लिए, उनका यह मकान, एकदम बेमतलब और फिजूल का है तो फिर तो, उसकी बात उनकी समझ में आ जानी चाहिए थी। लेकिन इतना कुछ सुनने के बाद

भी बेटे की बात, पारसनाथ बाबू की समझ में नही आइर् थी तो इसके पीछे कइयों बड़े कारण थे और उन कारणों में एक बड़ा यह था कि बेटा उनका उस समय अभी दसवीं में ही पढ़ता था। भविष्य में वह पढ़ेगा या आवारा गर्दी करेगा, इस बात की जानकारी, उन्हें नही थी। और अगर थोडी देर के लिए वे, यह मान भी लेते कि वह अच्छी तरह पढ़ लिख ही जाएगा तो भी, जिस तरह आज, अच्छी अच्छी डिगरियाँ लेकर, बेकारों की फौज, नौकरी के लिए दर दर की ठोकरे खा रही है और किसी दफ्तर के चपरासी की नौकरी तो दूर, नगर पालिका में, नालियाॅ और गुह मूत धोने के काम तक के लिए मंत्रियों की सिफारिसें और लाख लाख दो दो लाख रूपऐ घूस देने के बावजूद, नरक ढोने तक की नौकरी नही मिल पा रही है तो ऐसे में इस बात की क्या गारंटी है कि उनके बेटे को कोइर् नौकरी मिल ही जाएगी।

पारसनाथ बाबू को, अपने बेटे के भविष्य को लेकर, जो एक बड़ी चिंता थी वह तो थी ही थी उससे भी बडी एक चिंता उन्हें और भी थी और वह थी अपनी नौकरी से रिटायर होने के बाद, शूकून से अपने दो जनो की बुढ़ौती, काटने की। और उनकी दोनों बड़ी चिताएँ, बेटे के रोजी रोजगार से होने पर ही दूर हो सकती थी इसलिए उन्हें दूर करने की तैयारी के तौर पर पारसनाथ बाबू, बीकापुर में रोड के किनारे की जमीन काफी पहले खरीदकर छोड़ दिए थे। और अपनी नौकरी से रिटायर होने के पहले, रोड की तरफ की जमीन पर तीन दुकाने और पीछे की तरफ अपने परिवार के रहने के लिए मकान बनवा दिए थे। रोड की साइड में दुकाने बनवाने के पीछे का उनका गणित यह था कि यदि बेटे की नौकरी कहीं नहीं लगी तो वे एक में दुकान खुलवाकर उसमें उसे बैठा देगें और बाकी की दो दुकाने किराए पर उठा दैंगे।

यहाॅ तक पारसनाथ बाबू ने जितना कुछ किया था सब काफी सोच समझकर किया था, और उन्होंने ऐसा क्यो किया था, इसके पीछे का उनका गणित भी समझमें आता है। बेटा अभी बच्चा है, बाप के होटल में खाता है और टाॅगें पसार कर सो

जाता है, उसे अभी दुनिया की उलटवासियों से पाला नहीं नही पड़ा है, इसलिए वह इसतरह की बेहूदी बात कह गया, पारस नाथ बाबू को, बेटे की बात, कडुइर् लगने के बावजूद, वे उसपर कोइर् तवज्जो नही दिए थे और उसका बचपना समझ कर उसे माफ कर दिए थे तो उनकी यह समझदारी भी बडी आसानी से समझ में आ जाती है। लेकिन इतनी छोटी सी जगह में, उन्होंने अपना इतना बड़ा मकान क्यों बनवाया था इसके पीछे का उनका गणित समझ पाना, सबके बस की बात नही थी।

उनके ऐसा करने के पीछे का, उनका एक गणित, अपने मकान को भाड़े किराए पर उठाकर, उससे हर महीने, आमदनी करने की हो सकती थी। लेकिन बीकापुर जैसी छोटी जगह में, तहसील और छोटे से एक अस्पताल के अलावे, एक इंटर कालेज और एक सरकारी प्राइमरी स्कूल था। इसके अलावे, यहाँ पर दो तीन कान्वेंट स्कूल थे जिसे यहाॅ के बेरोजगार लड़के, दो तीन कमरों वाले घरो में, या मड़इयाँ डाल कर उसी में चलाया करते थे। इसके अलावे यहाँ पर और कुछ भी नहीं था। और इन सब जगहों में जितने लोग काम करते थे उनमे से, ज्यादातर या तो यहाॅ से बीस किलोमीटर दूर फैजाबाद शहर से रोजाना आना जाना करते थे या आस पास के गाॅवों से आते थे और दिन भर काम करके, शाम को अपने घर वापस लौट जाया करते थे। ऐसे में किराए पर मकान उठाकर, आमदनी की जाए, इसकी यहाॅ कोइर् गुंजाइश ही नही थी। लेकिन इस सबके बाद भी पारस नाथ बाबू ने, यहाॅ पर, अपना इतना बड़ा मकान बनवाया था और वह भी अपने फंड ग्रेच्यूटी और बैंक से कर्ज लेकर, तो ऐसा उन्होने इसलिए नही किया था कि वे बहुत बड़े पागल थे या किसी ने उन्हें चढ़ा दिया था और वे तैश में आकर ऐसी नादानी कर बैठे थे।

अपने यहाॅ एक बड़ी ही मशहूर कहावत है वह यह कि, जंगल में मोर नाचा किसने देखा। मोर अगर नाचे, और उसे कोइ्रर् देखे ही नही, तो ऐसे मोर के नाचने का कोइर् मतलब ही नहीं होता। जितना पैसा, पारसनाथ बाबू, बीकापुर मे अपना

मकान बनवाने में खर्च किए थे उतने पैसे में, वे चाहते तो, छोटा ही सही, किसी शहर में, अपना मकान बनवा सकते थे लेकिन ऐसा न करके, वे अपना यह मकान, बीकापुर जैसे कस्बे में और इतना बड़ा बनवाए थे तो इसके पीछे इसी कहावत का बड़ा हाथ था। परसनाथ बाबू का मानना था कि ऐसा काम, जिसे देखकर लोगों की छातियाँ न फटें और भीतर ही भीतर जल-जल कर खाक न हो, तो वेसा काम करने में मजा ही क्या है। जिदंगी का असली मजा तो तब मिलता है जब लोग उसे देखें और देख देखकर अपनी छातियाँ फाड़े। अगर पारसनाथ बाबू अपना मकान, शहर में बनवाते, तो एक तो वहाँ एक से बढ़कर एक झाॅइयाँ मकान होते हैं और उन मकानो के सामने, उनके छोटे से मकान की तरफ कोइर् ताकता तक नही। दूसरे उसे देखकर जिनकी छातियाँ मसकनी थी वे वहाँ से कोसों दूर रहते और उसे देखने के लिए शायद ही कभी पहुँचते। उलट इसके, गाँव उनका, बीकापुर से मुश्किल से तीन किलोमीटर की दूरी पर था, और उनके भाइर् पट्टीदार, गाँव जवार और नाते रिश्तेदार, जिन्हें उसे देखना था, और देख देखकर अपनी छातियाँ फाॅड़ना था वे सब आसपास ही रहते थे और बीकापुर उनका हमेशा आना जाना भी लगा रहता था। इसीलिए पारसनाथ बाबू को अपना यह मकान बनवाने के लिए, यही सबसे माकूल जगह जॅची थी और उन्होंने इसे यहाँ बनवा दिया था।

मैं इतनी देर तक, पारसनाथ बाबू और उनके मकान के बारे में, जितना कुछ सुनाया, इसे सुनकर आप यही समझ रहे होंगे कि मेरी यह कहानी पारसनाथ बाबू और उनके इसी मकान की कहानी है, लेकिन जनाब यह कहानी न तो पारसनाथ बाबू की कहानी है और न ही उनके मकान की ही है। दरअसल यह कहानी पारसनाथ बाबू के उसी बेटे की है जिसका मैंने थोड़ी देर पहले जिकर किया था। आप पूॅछेगें कि, जब यह कहानी, पारसनाथ बाबू के बेटे की थी तो मैं, सीधे सीधे उसे न सुनाकर, इतनी देर तक, इतना लम्बा चौड़ा पचड़ा क्यों गाता रहा। आपका यह पूँछना एकदम

जायज है जनाब। दरअसल पारसनाथ बाबू के बेटे की कहानी सुनाने के पहले, उनकी और उनके मकान की बाबत इतने विस्तार से बताने के पीछे, मेरा उद्देश्य, इस कहानी को अच्छी तरह कहने का था और बिना पारसनाथ बाबू और उनके मकान के, मेरी यह कहानी अधूरी रहती, इसलिए उनके बेटे की कहानी सुनाने के पहले, पारसनाथ बाबू और उनके मकान की कहानी सुनाना मेरे लिए बेहद जरूरी था।

खैर, तो जनाब, अमूमन देखने में यह आता है कि, अकेला बेटा माँ बाप का लाड़ दुलार पाकर, अपने मन का और जिद्दी हो जाता है और बड़ा होने पर अक्सरहाॅ खराब लड़कों की संगत में पड़कर, बिगड़ जाता है। लेकिन पारसनाथ बाबू का बेटा, माँ बाप के काफी लाड दुलार के बाद भी, दूसरे लड़कों की तरह न तो अपने मन का हुआ था और न ही बिगड़ा ही था। हालांकि, पढ़ने में वह अपने स्कूल में अव्वल कभी नहीं आया था लेकिन पढ़ने को लेकर, उसके स्कूल की तरफ से उसकी शिकायतें, पारसनाथ बाबू के पास कभी नहीं पहुँची थी। कारण इसका यह था कि जब वह छोटा था, तभी से दफ्तर से लौटने के बाद, पारसनाथ बाबू चाय, पानी करके उसे पढ़ाने बैठ जाया करते और जब तक वह बच्चा क्लास में था वे उसे खुद से पढ़ाते रहे थे। और जब वह ऊँची क्लास में पहुँचा था और उसके कोर्स की तमाम बातें पारसनाथ बाबू की समझ से बाहर हो गइर् थी तो वे अच्छा से अच्छा कोच, घर पर बुलाकर, उसके पढ़ाने की व्यवस्था करके रखते थे। इस तरह होते हवाते, जब वह बारहवीं में था तभी उसने इंजीनियरिंग की परीक्षा दिया था और उसमें वह सेलेक्ट भी हो गया था। और जब वह इंजीनियरिंग के, दूसरे साल में पहुॅचा था तभी पारसनाथ बाबू अपनी सर्विस से रिटायर होकर बीकापुर के अपने घर आ गए थे। इसके बाद वह इंजीनियरिंग का अपना कोर्स पूरा किया था और किसी इंस्टीट्यूट में डेढ़ लाख रूपये देकर, छः महीने साफ्टवेयर की ट्रेनिंग करके एक नामी आइर्0टी0 कम्पनी में, न

सिर्फ नौकरी पा गया था बल्कि उसी कम्पनी के काम से वह मलेशिया, इण्डोनेशिया, सिंगापुर और कनाडा तक घूम आया था।

बेटे की नौकरी लग जाने के बाद, पारसनाथ बाबू के जिम्मे, उसकी शादी करके एक अच्छी सी बहू अपने घर लाने का एक और बड़ा काम, बचा रह जाता था। लेकिन जब वे अपनी यह जिम्मेदारी पूरी करने के लिए तत्पर हुए थे तो, लड़की के चुनाव को लेकर उनका परिवार तीन अलग-अलग और एक दूसरे के धुर विरोधी धड़ों में बॅट गया था। उन तीन धड़ों में एक धड़ा पारसनाथ बाबू का था।

पारसनाथ बाबू, बेटे की शादी किसी ऐसी लड़की से करना चाहते थे जो, खूबसूरत होने के साथ साथ, जरूरत भर पढ़ी लिखी हो, घर गृहस्थी के काम में माहिर हो और अपने बाल-बच्चों को संभालने के साथ-साथ उन दोनों की भी अच्छी तरह देखभाल करें। शहर की पढ़ी लिखी और बड़े घरों की लड़कियों को वे बड़े करीब से देख चुके थे। घर गृहस्थी के काम में वे जो एकदम कच्ची और बेसऊर होती है वह तो होती ही है उससे भी बढ़कर, सब इतनी ठसकेदार सुविधापरस्त और बेहइर् होती है कि घर गृहस्थी का काम संभालना तो दूर, अपने सास ससुर तक को वे अपना टहलुवा बनाकर रखा करती है। उनका मानना था कि गाँव में, शहर का यह भदेस अभी तक नहीं पहुँचा है और गाँव की लड़कियाँ, घर गृहस्थी के काम में न सिर्फ माहिर होती है बल्कि उन्हें, अपनी परंपरा और मर्यादा का भी अच्छा ज्ञान होता है और वे छोटे बड़े का लिहाज और कदर करना भी जानती हैं इसलिए पारसनाथ बाबू गाँव की, किसी अच्छे कुल खानदान की लड़की को, अपनी बहू बनाकर, अपने घर लाना चाहते थे।

दूसरा धड़ा, जिसमें उनकी पत्नी, जो खुद गाँव से थी, और मुश्किल से अपना नाम लिख पाती थी और उनकी दसवीं पास दोनों बेटियाँ थी। उन तीनों का विचार पारसनाथ बाबू के विचार से एकदम उलट था। उनके विचार में, जो लड़का इतना पढ़ा

लिखा और विदेश तक घूम आया हो, उसके साथ, गाँव की गॅवार और खूसट लड़की बांध देने का मतलब है उसकी जिन्दगी का सत्यानाश कर देना। ऐसे लड़के के लिए कोइर् डाक्टर, इंजीनियर और धनाढ्य घर की शहरी लड़की, जो बड़े बड़ो के बीच बैठकर फर्राटेदार अंग्रेजी में सबसे बात करे वही उसकी शादी के योग्य हो सकती है। ऐसा उन लोगों का मात्र विचार ही नहीं था, बल्कि लड़के के इतना ऊँचे पहुँचने का सबमें प्रभुता का ऐसा नशा चढ़ा छाया था कि उसकेे आगे उन्हें पारसनाथ बाबू एकदम गॅवइर् गवाँर और गाॅव, परम्परा, संस्कार और कुल खानदान की उनकी सोच, निहायत रूढ़ और पोगांपथीे लगने लगी थी और उनकी इस सोच को लेकर वे सब न सिर्फ उनका मखौल उड़ाती बल्कि उनके दरवाजे पर, देखुवारों में, कोइर् देखुवार यदि गाँव का पहुँच जाता या जिसकी लड़की इण्टर, बी0ए0 पास होती तो वे, लोग उसे बैठने तक के लिए नहीं कहती थीं और खड़े खड़े ही अपने दरवाजे से रूखसत कर दिया करती थी। इतना ही नहीं, जब वह उनके दरवाजे से लौट रहा होता तो उस पर फब्तियाँ तक कस देती हु हं, भठियारा कहीं का, बी0ए0 पास इसकी लड़की और मुंह उठाए पहुँच गया हमारे यहाँ शादी करने। इसकी भला हमारे दरवाजे पर आने की हिम्मत कैसे पड़ी।

और पारसनाथ बाबू के परिवार का तीसरा धड़ा उनके बेटे का था। बेटा उनका पता नहीं कब और किस बटखरे और गज इंच के पैमाने से गाँव से लेकर बीकापुर और अपने जिले और आस पास के दूसरे तमाम जिलो तक की लड़कियों को नाप तौल कर परख लिया था कि वहाँ की लड़कियाँ, चाहे जितने अच्छे परिवार व कुल खानदान की और पढ़ी लिखी क्यों न हो सब इतनी डोल्ट होती हैं कि अंग्रेजी की बात तो दूर, अगर उन्हें हिदी का एक पैरा लिखने को कह दिया जाए, तो वह तक वे शुद्ध और ठीक ठीक नहीं लिख सकती।

यह प्रसंग काफी लंबा है जनाब और इसके विस्तार में जाने से कहानी बड़ी लंबी खिच जाएगी इसलिए इसे और लंबा न खींचकर सिर्फ इतना बता दूँ कि पारसनाथ बाबू, जब तलक बेटा पढ़ता रहा था तब तलक तो वे, जो कुछ और जैसा करना चाहे थे सब अपने मन की किए थे। लेकिन बेटे की नौकरी लग जाने के बाद से, घर में उनकी मर्जी चलना बंद हो गइर् थी और बेटे की शादी के मामले में तो, उनकी एक भी नहीं चली थी। कारण इसका यह था कि बेटा उनका उस समय तक, जो दुनिया देख चुका था और जैसे लोगों की संगत में रह लिया था उसके आगे उसे, पारसनाथ बाबू और उनकी सोच, दोनों निहायत जड़ और आदिम काल की लगने लगी थी। और दूसरा कारण यह कि, पारसनाथ बाबू की पत्नी और बेटियाॅ, जो इसके पहले तक, उन्हें काफी समझदार, और मातब्बर समझती थी। बेटे की नौकरी लगते ही, उनके प्रति सबका नजरिया ही पूरी तरह बदल गया था और सब उन्हें निहायत गवॅइर् और लल्लू किस्म का आदमी समझने लग गइर् थी। इसलिए, जब बात बेटे की शादी की आइर् थी तो किसी ने उनका साथ नहीं दिया था और वे एकदम अकेले पड़ गए थे। खैर होते हवाते अंत में, उनके बेटे की ही मर्जी चली थी। बेटा उनका, जैसा वह चाहता था, इंटरनेट पर, कान्वेट पढ़ी, और उसी की तरह, बड़ी कंपनी में काम करने वाली, एक लड़की तलाश कर, पारसनाथ बाबू को बता दिया था और पारस नाथ बाबू मजबूर होकर उसी के साथ उसकी शादी कर दिए थे।

पारस नाथ बाबू के घर में, पिछले दो दिनो से भीड़ लगी हुइर् है और भीड़ का हर आदमी इतना व्यस्त है कि, किसी को किसी से न तो बात करने की फुर्सत है और न ही, अपने काम में, दूसरे की थोडी सी दखलंदीजी ही बर्दास्त है। कारण इसका यह है कि दो दिनों बाद, पारसनाथ बाबू के बेटे के साले की शादी है और उसकी उस शादी में, पारस नाथ बाबू पति पत्नी, उनकी दोनों बेटियाँ, दामाद और बच्चे यानीकि उनके पूरे कुनबे को शामिल होने का न्योता मिला हुआ है। अगर यही न्योता उन

लोगो को, उनके किसी दूसरे रिश्तेदार के यहाॅ से मिला होता तो उसमें शामिल होने को लेकर, लोगो में इतना उत्साह और उत्तेजना नही होती। न्योता पारस नाथ बाबू के बेटे की ससुराल से मिला हुआ था इसलिए यह मौका, सबके लिए काफी महत्वपूर्ण और बड़ा ही खास था। कारण इसका यह था कि एक तो पारस नाथ बाबू के बेटे की ससुराल काफी बड़े शहर में थी दूसरे वे लोग, बड़ी ही ऊॅची हैसियत वाले आदमी थे और इससे भी बढ़कर, जिस लडके की शादी हो रही थी वह, हाइकोर्ट में वैरिष्टर था और शादी भी उसकी किसी ऐरी गैरी लड़की से नही, बल्कि सुप्रीम कोर्ट के किसी जज की बेटी से हो रही थी। इस तरह जहाँ सब कुछ इतना बड़ा बड़ा और विराट था तो उसमे शामिल होने वाले लोग, कितने बड़े और ऊँची हैसियत वाले होंगे इसका अंदाजा लगा पाना मुश्किल था और इतने विराट और बड़े मे जब पारसनाथ बाबू और उनके परिवार को शामिल होने का न्यौता मिला था तो विराटता और बड़प्पन की अनुभूति से सब इतना रोमांचित और तरंगित थे कि उसकी झोंक में कोइर् किसी की सुन ही नहीं रहा था।

हालांकि, बेटे की शादी में, पारस नाथ बाबू की मर्जी नही चली थी और वे उसकी शादी बड़ा गला दबाकर, और आधे अधूरे मन से किए थे। और शादी के पहले जिस बात का उन्हें डर था वही हआ था। बेटे की ससुराल वाले, अपने दामाद को छोड़कर, दूसरे किसी से कोइर् मतलब ही नही रखते थे और बहू उनकी, जो पहली दफा, विदा होकर, उनके घर आइर् थी तो उसके बाद वह बेटे के साथ ही रहती थी और अगर आती भी थी तो सिर्फ अपने मायके, पारस नाथ बाबू के घर वह दोबारा कभी नही आइर् थी। यही नही शादी के बाद, बेटे की ससुराल वाले, बेटे के बाप को गवॅही भाती खिलाने के लिए बुलाते है। गाॅव में यह बड़ा आम सा रिवाज है और इस रिवाज को छोटा बड़ा सभी निभाता है, इसमें लड़के का बाप, अपनी भयवादी के साथ, बड़े धूमधाम से, लड़के की ससुराल पहुॅचता है और वहाॅ पर उसका जो आदर

सत्कार होता है वह तो होता ही है साथ में गवॅही भाती खाने का, मुह माॅगा नेग भी उसे दिया जाता है। बेटे की ससुराल वाले, पारसनाथ बाबू को गवॅहीभाती खिलाने को कौन कहे, एक दफा जब वे बेटे की ससुराल गए थे तो, समधी उनका, अहक कर उनसे मिलने और उनका स्वागत सत्कार करना तो दूर दुआ सलाम के बाद उन्हें बाहर लान में बैठाकर नौकरो के हाथ चाय पानी भिजवा दिया था, और लौटते समय उनसे मिला तक नहीं था। उसके इस व्यवहार से पारसनाथ बाबू इतना बेइज्जत महसूस किए थे कि वे, फिर कभी बेटे की ससुराल न जाने की कसम तक खा लिए थे। यही नहीं तीज त्योहार और दीवाली, दशहरे पर बहू के मायके से उसकी ससुराल त्योहारी भेजी जाती है। यह बड़ा आम सा रिवाज है और हर छोटा बड़ा, अपनी औकात भर इसे निभाता है लेकिन बेटे की शादी के बाद उसकी ससुराल से, एक पाव मिठाइर् तक पारसनाथ बाबू के घर कभी नहीं पहुॅची थी। इस सबको लेकर, बेटे की ससुराल की तरफ से पारसनाथ बाबू ही नहीं, बल्कि उनके परिवार के सभी लोग बड़ा उपेक्षित और ठगे हुए से महसूस करते थे और इसके चलते सबके मन में गहरा क्षोभ था। बावजूद इस सबके, जब उसकी ससुराल से, सबको शादी में शरीक होने का कार्ड मिला था तो, इससे न सिर्फ लोगों के भीतर की सारी तल्खी और खटास दूर हो गइर् थी बल्कि उन्हें लगा था कि अपने मुन्ने के, इतना ऊँचे पहुँचने के एवज में, मान सम्मान के जिस हक से, सब नहरूम कर दिये गये थे, उसकी ससुराल वालों ने, शादी में उन्हें न्योत कर, उनका वह हक उन्हें दे दिया है, और अपना वह हक पाकर, पारसनाथ बाबू और उनके परिवार का हर सदस्य बुरी तरह उत्तेजित और रोमांचित था।

इसके पहले पारसनाथ बाबू धोती कमीज, और पैंट बुशर्ट छोड,ॅ सूट अपनी जिन्दगी में कभी नहीं पहने थे। यहाँ तक कि बेटे की शादी तक में नहीं। बेटे की शादी में, सब कहते मर गये थे कि, पारसनाथ बाबू आप, बेटे की शादी करने जा रहे है, और वह भी इतने बड़े घर में, अरे महराज अब तो आप अपना पुराना चोला बदल

लीजिए लेकिन पारसनाथ बाबू, अपने उसी खिचड़ी बाल, और पुराने पैंट बुशर्ट और चप्पल में, बेटे की बारात लेकर गये थे और उसके बहू भोज तक में, मेहमानों का स्वागत उसी वेष में किये थे। लेकिन जब उन्हें, उसकी ससुराल से शादी का कार्ड मिला था तो यह सोचकर कि जब वे, उसकी शादी में, बड़े बड़ो के साथ बैठेगें और लोग उनसे उनका परिचय पूछेगें और उस समय वे, अपना सीना चौड़ा करके लोगों को बतायेंगे कि जिस लड़के की शादी, बैरिस्टर की बहन से हुइर् है मैं उसी का पिता हूँ तो लोग उन्हें हलवाहों जैसी पोशाक में देखकर क्या सोचेगें? इसके लिए पारसनाथ बाबू, अपने लिए नया सूट, जूता मोजा, टाइर् न सिर्फ बनवा और खरीद लिए थे बल्कि उसे पहनकर बीकापुर बाजार के, कइयो चक्कर भी लगा आए थे। पारस नाथ बाबू को, उनके उस एकदम नए और अनोखे चोले में, लजाते शर्माते, कभी लंगड घिसटकर, तो कभी तनकर चलते देख, लोग कुतूहल मे भरकर अपनी आंखे फाड़फाड़ कर उन्हें देखते। अरे पारस नाथ बाबू आप? आप तो महराज, एक दम पहचान में ही नही आ रहे है कुछ खास बात है क्या जो...? इसके आगे लोग उन्हे, ऊपर से नीचे तक गहरे से ताक कर, आॅखों के इशारे से उनसे पूछते, जनाब, आपकी इस नइर् हुलिया और चेहरे की बदली रंगत का आखिर राज क्या है कुछ हमें भी तो बताइए?

अरे कुछ खास नही है भइर् ओ अपना बेटा है न उसके साले की शादी पड़ी है। समधी जी कह कर गए हैं, कि, शादी में जब तक मै अपने पूरे परिवार के साथ नही पहुॅचूँगा वे बेटे की बारात ही लेकर नही जाएँगे। आप लोग तो देख ही चुके है कि वे लोग, कितने बड़े आदमी है अब ऐसे बड़े आदमी के यहाॅ मै, अपने गवॅइर् पोषाक में पहुॅचूॅगा तो कितना फूहड़ लगूॅगा इसीलिए.....।

यही नही पारस नाथ बाबू की पत्नी, जिनकी गिनती अब पुरनियों में होने लगी थी, बाल उनके सन की तरह सफेद हो चुके थे, लिपस्टिक पाउडर वर्षो पहले छोड चुकी थी वे एकदम फिटफाट और टंच दिखने के लिए, दो दिन पहले अपने बालों से

लेकर भौहों तक खिजाब से काला कर ली थी, होठो पर तरह तरह के लिपस्टिक आजमा रही थी क्रीम पाउडर चेहरे पर पोते घूम रही थी और कौन सी साड़ी उन पर अच्छी फबेगी उसे, अपनी देह पर लपेट, शीशे में कइयो कोणों से देख देख कर सबसे अच्छी साड़ी का चुनाव करने में व्यस्त थीं। लेकिन उन्हे इस बात पर रोना आ रहा था कि ढेर सारा क्रीम पाउडर चेहरे पर पोतने और अच्छी से अच्छी साड़ी पहनकर भी वे, जिस तरह का जॅचना चाहती थी वेसा कत्तइर् नही जॅच रही थी। यदि किसी साड़ी में उन्हे लगता, कि उसमे वे थोड़ा ठीक लग रही हैं और उस पर, वे बेटियों को बुलाकर, उनकी राय पूॅछती, तो बड़े भौडें ढंग से लिपा पुता उनका चेहरा देख बेटियों के चेहरो पर शरारत खेलने लग जाती। माॅ, तू थोडी देर गम खा, हम लोग अपना सब संभाल लेगें ना तो दोनो जुटकर तुझे ऐसी हीरोइन बना देगे कि भाइर् की ससुराल वाले सिर्फ तुझे ही देखेंगे। बेटियों की आँखों में उतर आइर् शरारत और उनके व्यंगबाण पर पारसनाथ बाबू कीपत्नी जल भुनकर राख हो जाती। इन कुलच्छनियों को खुद को ही हेमा मालिनी दिखाने की फिकर पडी है अपनी छोड़कर दूसरे किसी की परवाह ही नहीं है इन्हें।

पारस नाथ बाबू अपनी दोनों बेटियों का ब्याह गाॅव में किये थे। एक दामाद उनका खेती-बाड़ी करता था और दूसरा गाॅव की ही एक प्राइमरी पाठशाला में अध्यापक था। दोनों की जितने आमदनी थी उसमें उन्हें खाने-पीने की कोइर् कमी नहीं थी। लेकिन इतने बड़े-बड़ो और रसूखदार लोगों के बीच, बैठने के लिए जिस ठाठ और चमक दमक की जरूरत होती है उसकी उनकी हैसियत नहीं थी। बावजूद इसके जब उन्हें शादी का कार्ड मिला था तो दोनों दामाद घर का गेहूँ चावल बेंचकर खुद के लिए तथा अपनी-अपनी पत्नियों और बच्चों के लिए लेटेस्ट फैशन और डिजाइन की दामी से दामी पोशाकें और बनाव सिंगार के सामान खरीदने के साथ-साथ लोग उन्हें देखकर यह न समझ बैठे की वे गाॅव से हैं इसके लिए दोनों अपने पूरे कुनबे को लेकर

फैजाबाद गये थे और खुद मेन्स पार्लर में बैठकर अपनी लम्बी मूँछे जो ऐसे मौकों पर उनके गॅवइर् होने की ढोल पीटती, उसे मुडवा दिये थे, बाल कटवा, छॅटवाकर उनमें रंग-रोगन करवाये थे और लोशन क्रीम से चेहरे की टोनिंग करवाकर अपना पूरा लुक ही बदलवाकर लौटे थे। पत्नियाँ उनकी, शहर के नामी ब्यूटीपार्लर में अपने नाखूनों से लेकर चेहरे तक का वह सब कुछ जो वहाँ होता था न सिर्फ उसे करवा आइर् थी बल्कि अपने लम्बे बालों और चोटी फुलरों को तिलाक देकर उसकी जगह गर्दनों तक के बलखाते घुमेरदार बाल लहराती, झमकाती वापस लौटी थी और इस समय वे, अलग-अलग कोठलियों में बन्द खुद के तथा अपने परिवार के सजने सॅवरने के सामान कपड़े और जेवर सरियाने, सहेजने में जुटी हुइर् थी।

उनके बच्चे, जो दिनभर मिट्टी और धूल से सने रहते थे, जरा जरा सी चीज के लिए रो-चिल्लाकर सारा घर सिर पर उठा लेते थे और ऊधम मचाकर और अपनी चिल्ल-पों से घर के लोगों का जीना-मुहाल किये रखते थे शादी का कार्ड मिलते ही उनके खेलने, कूदने पर न सिर्फ पूरी पाबन्दी लगा दी गइर् थी बल्कि सभ्य लोगों के बीच उजबकों जैसा व्यवहार करके और गाँव की गँवारू भाषा बोलकर लोग अपने गँवइर् होने की ठोल न पीटें इसके लिए सबको बोलने से लेकर उठने, बैठने और चलने, फिरने तक का माडर्न सलीका सिखाया जाने लगा था। नीकनोहर खाने की चीजें देख सब उसी पर नजरें गड़ाकर न बैठ जाए, खाने की टेबुल पर जायें तो उस पर सजे व्यंजनों पर भुक्खड़ो की तरह टूट न पड़े, फल, मिठाइर्यों के लिए छीना झपटी न शुरू कर दें, खाते समय खाना बंदरों की तरह दोनों हाथों से मुँह में ठूॅसने न लगे और कौर मुँह में लेने के बाद बैलों की तरह चभर-चभर करके न खायें बल्कि मुॅह बन्द करके उसे कूँचे और निगल जायें, जैसी बातें और टेबुल मैनर की दूसरे तमाम तौर-तरीके उन्हें समझाया और सिखाया जाने लग गया था। और मजे की बात तो यह, जो बच्चे, इसके पहले अपने मन की किया करते थे, माँ-बाप की नसीहतों और

हिदायतों को एक कान से सुनते थे और दूसरे से निकाल दिया करते थे वे अब, न सिर्फ उसे गांठ बांध उसपर मुस्तैदी से अमल करने लग गये थे बल्कि हर बड़ा, अपने से छोटे का, हेडमास्टर बन गया था और उसकी छोटी सी छोटी गलती पर टोक टुकार और समझाना बुझाना छोड़ सीधा उसे धरकर पीट दिया करता था। सबसे छोटे और जूनियर भेदियों की तरह, बड़ो की हर गतिविधि पर टकटकी लगाये रखते। जहाँ उन्हें उनमे सिखाये गये आचरणों और हिदायतों से उलट या हटकर थोड़ा सा भी कुछ मिल जाता तो वे उसे तुरन्त पापा, मम्मी के कान में फूॅक आते।ं

पारसनाथ बाबू के बेटे को उसकी कंपनी से, एक तो छुट्टी जल्दी नहीं मिलती थी, दूसरे साले की शादी में, हफ्ता पन्द्रह दिन पहले छुट्टी लेकर, ससुराल में उसके बैठने का कोइर् मतलब भी नहीं था इसलिए वह, अपनी पत्नी को, शादी से पन्द्रह दिन पहले, उसके मायके भेज दिया था। उसकी योजना, शादी से एक दिन पहले, ससुराल पहुँचने की थी और जब वह अपनी तँय योजना के हिसाब से, अपनी ससुराल पहुँचा था तो वहाँ, बेकार बैठने के सिवा उसके करने लायक कुछ था नहीं इसलिए वह, बीच के समय में, अपने माँ बाप और बहनों से मिलने के लिए बीकापुर चला आया था। लेकिन जब वह बीकापुर के अपने घर पहुँचा था तो पारसनाथ बाबू और अपनी माँ समेत बहनों और भांजे भांजियों की बदली हुलिया और व्यस्तता देख आश्चर्य में पड़ गया था।

क्या बात है पापा, देखता हूँ आप सभी लोगों की हुलिया ही पूरी तरह बदली हुइर् है, और सब के सब अपने सामान सूमान बाॅध रहे है। आप लोग, कहीं जाने की तैयारी में है क्या?

तुम्हें नहीं पता है?

नहीं, मुझे तो कुछ भी नहीं पता है, क्या बात है?

अरे कल तुम्हारे साले की शादी है न उसी की तैयारी हो रही है यह सब।

तो क्या, आप लोग भी शादी मे जा रहे है?

क्यो? हम लोग नहीं जा सकते क्या?

नही नहीं, मेरे पूॅछने का वह मतलब नहीं था।

फिर क्या मतलब था जरा मैं भी सुनूँ तो?

दरअसल, पारसनाथ बाबू का बेटा, उनसे यह सवाल करते समय, इतना कटखना हो गया था कि इसे सुन, पारसनाथ बाबू, एकदम से आग बबूला हो उठे थे। उन्हें आग बबूला हुआ देख, लड़का उनका उस समय तो कुछ नहीं बोला था और वह वहाँ से हट गया था लेकिन जब शाम को, परिवार के सभी लोग खाना पीना करके, एक जगह इकट्ठा हुए थे तो, अपने ऊँचे ओहदे और बड़े घर का दामाद होने के जिस गौरव से वह गौरवान्वित था लेकिन उसके घर से लेकर, बीकापुर के जाहिल लोगों को, उसका वह गौरव न तो दिखाइर् देता था न ही किसी की समझ में ही आता था उसे समझाने के लिए वह, पालथी मारकर बैठ गया था और अपनी गर्दन आगे की तरफ खींच उन्हे समझाने लग गया था, ऐसा है पापा कि वे लोग बहुत बड़े आदमी है और इस शादी में भारत के अटार्नी, जनरल होमी, सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस और हाइर्कोर्ट के जज बैरिस्टर तथा शहर की बड़ी बड़ी हस्तियाँ शामिल होगी। अब आप ही सोचिए, कि जहाँ इतने बड़े बड़े और रूतबे वाले लोग और उनके बीबी बच्चे, इकट्ठा होंगे और सब अमेरिकन स्टाइल की फर्राटेदार अंग्रेजी में आपस में बातें करेंगे तो आप लोग, मुँह बाए उनका मुँह ताकते बैठे रहेगें। और जब कोइर् आपसे पूॅछ लेगा, हैलो जेन्टलमैन, यू फ्राम, एन या इन्ट्राडक्टा, तो आप लोगों की समझ में कुछ आयेगा? पारसनाथ बाबू का बेटा, अपनी जुबान ऐंठ, तालू और आगे के दाॅतों और होंठों से अमेरिकन स्टाइल की ऐसी अंग्रेजी बोला था कि, उसकी अंग्रेजी, पारसनाथ बाबू जो अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखते थे उन तक के पल्ले नहीं पड़ी थी। थोड़ी देर दंभ से वह अपनी गर्दन ऐंठ, उनके चेहरे पर देखने के बाद, बड़ा मुस्कुराते हुए दोनों बहनों, माँ

और भांजों को देख उनसे भी यही पूँछा था, वे लोग इसी तरह की अंग्रेजी बोलेंगे बोलो, तुम लोगों की समझ में आयेगी? और फिर वह, उनका जबाब मिलने के पहले ही, अपना अगला प्रश्न उन पर दाग दिया था। और वे लोग लाख-लाख डेढ़ डेढ़ लाख रूपये का ड्रेस पहनकर बैठे होंगे, और दस दस हजार रूपये दाम की विदेशी परफ्यूम छिड़ककर मह मह महक रहे होंगें उनके बीच, आप लोगों की जो हुलिया होगी उसे देखकर, सब आप लोगों को निहायत गॅवार और जाहिल समझकर आपकी खिल्ली उड़ाएॅगे तो आप लोगों को कैसा लगेगा?

बेटे की बात सुन, पहले तो पारसनाथ बाबू थोड़ी देर तक, अपना मुँह बाए और आँखे मिचमिचाते, कुछ इस तरह उसे देखते बैठे रहे थे जैसे, उसकी बात, उनकी समझ में ही न आइर् हो, और जब थोड़ी देर बाद, उसकी बात उनकी समझ में आइर् थी तो वे, उससे सिर्फ इतना ही कह पाये थे, ठीक कहा तुमने, हम लोग इतने बड़े लोगों के बीच सही में बैठने लायक नहीं हैं। इसके आगे वे बेटे से और भी बहुत कुछ कह जाना चाहते थे लेकिन उसे कहते, इसके पहले ही अमर्ष से उनका गला रूॅध गया था और जो कुछ वे कहना चाहते थे, वह उनके भीतर ही दबा रह गया था।

सोमेश शेखर चन्द्र